|| ओम् ||

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का पाक्षिक शंखनाद

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली–110007,

चलभाष : 9810117464 / 9888051444

Website : www.aryayuvakparished.com **E-mail : aryayouth@gmail.com**

Yahoo Discussion Group: http://groups.yahoo.com/group/aryayouthgroup/

To join the group, send email to aryayouthgroup-subscribe@yahoogroups.com

वर्ष–27 अंक–4 ज्येष्ठ–2067 दयानन्दाब्द 187 16 जुलाई से 31 जुलाई 2010 द्वितीय अंक

यदि आप आर्य युवा शक्ति की कार्य प्रगति की एक झलक देखना चाहते हैं तो अवश्य पधारें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का
32 वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन

आर्य युवा शक्ति व बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 5 सितम्बर 2010, प्रातः 10.30 से 5.00 बजे तक

स्थान : आर्य समाज, दीवान हाल, चांदनी चौक, दिल्ली–110006

–: कार्यक्रम :–

सानिध्य : स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज

(अध्यक्ष–वैदिक विरक्त मण्डल व सार्वदेशिक सभा संचालन समिति)

अध्यक्षता : डॉ. अशोक कुमार चौहान जी

(संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी विश्वविद्यालय)

ध्वजारोहण : श्री एस. डी. अग्रवाल जी

(प्रबन्ध निदेशक, ब्लेज फ्लेश कोरियर)

–: विशिष्ट अतिथि :–

श्री आनन्द चौहान	श्री दीपक भारद्वाज	श्री सुशील गुप्ता	डॉ. डी. के. गर्ग	श्री पी.के. गुप्ता
श्री देवेन्द्र पाल वर्मा	श्री मायाप्रकाश त्यागी	श्री आर.के. चिलाना	श्री के. एस. यादव	श्री एस.डी. त्यागी
श्री एस.के. अग्रवाल	श्री नरेन्द्र आहूजा	श्री लक्ष्मीचंद आर्य	श्री रमाकान्त सारस्वत	श्री विकास आर्य
श्री श्रद्धानंद शर्मा	श्री महेन्द्रकुमार सिंघल	श्री रविन्द्र मेहता	श्री जितेन्द्र डावर	श्री भजनप्रकाश आर्य
श्री कृष्णगोपाल दीवान	डा. ओमप्रकाश मान	श्री दर्शन अग्निहोत्री	श्री हीरालाल चावला	श्री जगदीश आर्य
डा. सुन्दरलाल कथूरिया	श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा	श्री चतरसिंह नागर	श्री रामचंद कपूर	श्री धर्मपाल सिब्बल
श्रीमती शशिप्रभा आर्या	महेन्द्र सिंह आर्य	माता सुदर्शन खन्ना	वीरेन्द्र हुड्डा	कै. रुद्रसेन संधू

–: आमंत्रित विद्वतजन :–

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, आचार्य अखिलेश्वर जी, प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, डा. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, प्रि. रमेशचन्द्र जीवन, डॉ. आनन्द सुमन सिंह, श्री अरुण आर्य, आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य, श्री मित्र महेश आर्य, डॉ. सुधीर गुप्ता, पं. धनेश्वर बेहरा, श्री मनुसिंह, ब्र. दीक्षेन्द्र, श्री रामकृष्ण शास्त्री, पं. राज किशोर शास्त्री, श्री अशोक तिवारी, डॉ. धर्मपाल आर्य, श्री ऋषि आर्य, , श्री राजेश्वर जिज्ञासु, आचार्य अमरदेव शास्त्री, पं. मेघश्याम वेदालंकार, कैप्टन अशोक गुलाटी

विशेष आकर्षण

- राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज की भूमिका पर विचार
- देश भर के चुने हुए 1.000 आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम
- केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के भावी कार्यक्रम पर विचार
- रक्तदान शिविर : सभी रक्तदान देकर पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ : प्रातः 8.30 से 9.30 तक   प्रातः राश 9.00 से 10.00 तक ऋषि लंगर 1 से 2 तक

आर्य समाज में उत्साह व जोश की एक नई लहर पैदा करने के लिए आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

—: निवेदक :—

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**विश्वनाथ आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**यशोवीर आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**सत्यभूषण आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**रामकुमार सिंह** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	**देवेन्द्र भगत** प्रैस सचिव	**कृष्णचन्द पाहूजा** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**राकेश भटनागर** राष्ट्रीय मंत्री	**दुर्गेश आर्य** वरिष्ठ मंत्री
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**मनोहरलाल चावला** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**वीरेन्द योगाचार्य** राष्ट्रीय मंत्री	**आनन्दप्रकाश आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**प्रवीण आर्य** राष्ट्रीय मंत्री

—: स्वागत समिति :—

डा. रविकान्त	**रामकृष्ण तनेजा**	**चौ.लक्ष्मीचंद**	**शशिभूषण मल्होत्रा**
महेन्द्रसिंह चौहान	**दुर्गाप्रसाद कालरा**	**के.एल. पुरी**	**राजेन्द्र लाम्बा**
राजन अरोड़ा	**प्रदीप तायल**	**वीरप्रकाश आर्य**	**अजय जिंदल**

प्रबन्ध समिति : सर्वश्री बलजीत सिंह आदित्य, शंकरदेव आर्य, संतोष शास्त्री, सुरेश आर्य, ओमबीर सिंह, नीता खन्ना, प्रभा सेठी, अर्चना पुष्करण, गायत्री मीना, कृष्णलाल राणा, हीरा प्रसाद शास्त्री, दिनेश आर्य, जितेन्द्र सिंह आर्य, श्रीकृष्ण दहिया, मनोज शास्त्री, सुरेश मुखीजा, डॉ. मुकेश सुधीर, ईश कुमार आर्य।

नर कहरि वीर विनायक सावरकर राष्ट्र के अजड्ड प्रेरणाड्डोत

—मनुदेव 'अभय'

कहा गया है कि सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु परास्त नहीं हो सकता। लोकभाषा में यह कहा जाता है कि सच्चाई सिर चढ़कर बोलती है, घमंडी का सिर सदैव नीचा ही रहता है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वसंत साठे ने शनिवार, 3 मई 2003 को भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की जोरदार वकालत की।

सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुंह काला......श्री साठे ने इस काम के लिए प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को भारतीय संविधान में संशोधन का सुझाव तो दिया है, सावरकर जी का विरोध करने के लिए कांग्रेस नेतृत्व की कड़ी आलोचना की। उनकी आलोचना पर कांग्रेसी हतप्रभ हो गये। उन्होंने प्रधनमंत्री निवास पर श्री सावरकर की कृतियों के लोकार्पण समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री तथा उपप्रधान मंत्री से अपील की कि संविधान में संशोधन के जरिये भारत का नाम हिंदुस्तान किया जाये और यहां के लोगों को भारतीय की बजाय 'हिन्दू' कहलाने का अधिकार दिया जाये। इससे देश स्वतः ही हिन्दू राष्ट्र हो जायेगा और इस पर आपत्ति नहीं होगी। उन्होंने अपनी बात पर और बल देते हुए कहा, 'जो इस परिभाषा को तैयार नहीं होगा वह नागरिक नहीं कहलायेगा। संविधन में मामूली संशोधन कर हम भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाकर सावरकर जी का सपना पूरा कर सकते हैं।' इतना ही नहीं, उन्होंने इकबाल के मशहूर गीत 'सारे

सेक्युलर कांग्रेसियों में हीनता की भावना

26 फरवरी 2003 के दिन भारतीय संसद के केन्द्रीय कक्ष में उनकी 35वीं पुण्य तिथि पर महान स्वतन्त्रता सेनानी वीर विनायक दामोदर सावरकर के तैल चित्र की प्रतिष्ठापना की गई। इस अवसर पर हिन्दू जनता ने अपार हर्ष व्यक्त किया, वहीं साम्यवादी, सेक्युरिज्म कांग्रेसी तथा जातिवादी कथित क्षेत्रीय क्षत्रपों के हृदयों पर सांप लोटने लगे। मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति में संलिप्त पार्टियों के अनेक सांसदों की स्थिति तो बहुत ही हास्यास्पद हो रही थी। वे विवश होकर एक–एक कर समारोह से खिसकने लगे। ऐसा कर उन लोगों ने अपने मतदाताओं का घोर अपमान कियां ।

जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' में भी संशोधन का सुझाव दे डाला। 'हिन्दी हैं हम वतन है हिंदोस्तां हमारा' को बदलकर 'हिन्दू हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा' कर देना चाहिए।

सामयिक प्रसंग पर श्री साठे ने संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में सावरकर जी का चित्र लगाने का विरोध करने के लिए कांग्रेस (सेक्यूलर) की तीखी आलोचना की और उन्हें वैचारिक हीनता से ग्रस्त बताया। इतना ही नहीं, उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने संदर्भरहित बातें निकालकर सावरकर पर कीचड़ उछालने का काम किया है। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, सुभाषचन्द्र बोस, राजर्षि टंडन और इंदिरा गांधी ने भी सावरकर को महान देशभक्त माना है। सावरकर जी का विरोध कर कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व ने निहायत ही गलत काम किया है। (संदर्भ 4 मई 2003)

इस प्रकार वीर सावरकर जी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन श्री बसंत साठे, जो कि कांग्रेस के सर्वमान्य नेता थे, ने अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता तथा ओजस्विता का परिचय दिया। **यदि सत्य कर कहा जाये तो वर्तमान नेताओं का समूह वीर सावरकर जैसे सूर्य के सम्मुख 'जुगनू' जैसा लगता है** और मुस्लिम परस्त मनोवृत्ति से बुरी तरह से पीड़ित है और वोट बैंक के लालच में मजारों पर चादर बिछाते रहते हैं।

स्वतन्त्राता संग्राम के इतिहास को लिखते समय वीर सावरकर के कार्यों, सैल्यूलर जेल की यातनाओं तथा स्वतन्त्र भारत में उनकी भूमिका मूल्यवान रही है। इसलिए वीर सावरकर की सदैव प्रासंगिकता रही है, वर्तमान में है और रहेगी।

जिस कांग्रेस संगठन की चर्चा अनेक कांग्रेसी भाई बड़े गर्व से करते हैं, उस कांग्रेस की स्थापना किसी भारतीय ने नहीं अपितु एक विदेशी नौकरशाह एलन अक्टोवियन (सर ए.ओ.) ह्यूम ने की। कांग्रेस की स्थापना के 125 वर्ष बाद पुनः इस कांग्रेस की बागडोर एक विदेशी इटालियन कैथोलिक महिला के हाथों में है। इन विदेशी तत्वों से भारत के उज्ज्वल भविष्य की आशा कैसे की जा सकती है? हमारे विद्वान पाठकों के सम्मुख एक रोचक और महत्वपूर्ण घटना, जिसका सीधा सम्बन्ध कांग्रेस के संस्थापक सर ए. ओ. ह्यूम से है, प्रस्तुत करने का गर्व हो रहा है।

साड़ी और बुर्का पहनकर जान बचाने भागे

लेखक : विनायक दामोदर सावरकर

सन् 1829 में इंग्लैंड में जन्मे ए. ओ. ह्यूम सन् 1855 में इटावा के मजिस्ट्रेट और कलेक्टर थे। जब उन्होंने 1857 की क्रांति का समाचार सुना, तब ह्यूम ने अपने विभागीय एवं राजनिष्ठ भारतीय सैनिकों की एक टुकड़ी बनाई। कुछ क्रांतिकारी सैनिक एक मंदिर में ठहरे हुए थे। ह्यूम जैसे ही इस मंदिर पर धावा बोलने पहुंचे कि उनके पीछे सहायता के लिए आने वाले, जिन राजनिष्ठों को वे अपना सहायक समझ रहे थे वे सब मंदिर के पास पहुंचते ही मंदिर को घेरकर रक्षा के लिये खड़े हो गये। उन्होंने मंदिर में बैठे क्रांतिकारियों की जय–जयकार शुरू कर दी। नगर व गांव के लोगों ने उन क्रांतिकारियों को भोजन सामग्री पहुंचानी शुरू कर दी। यह देखकर ह्यूम को पसीना आ गया। इतना ही नहीं, जिन भारतीय सैनिकों को ह्यूम अपने साथ ले गये थे, उनमें से केवल एक ही मंदिर पर धावा बोलने में शामिल हुआ तथा वह भी क्रांतिकारियों की गोली से मारा गया।

यह दृश्य देखते ही ह्यूम ने आदेश भंग करने वाले भारतीय राजनिष्ठ सैनिकों को लताड़ना भूलकर भागकर जान बचाने में ही भलाई समझी। वे अपनी छावनी के तम्बू में घुस जाने तक भागते रहे।

अपने प्राणों पर बन आई तथा इस घटना का जो डर ह्यूम के मन में बैठा वह जीवन भर उनको बेचैन किये रहा। इसका चिरन्तन परिणाम उनकी राजनीति पर भी पड़ा। सन् 1857 जैसी सशस्त्र क्रांति का संकट अंग्रेजी सत्ता को

ह्यूम साड़ी और बुर्का में

भारतीय सेना के क्रान्तिकारियों ने ब्रिटिश छावनी पर हमला किया। 'मारो फिरंगी को' की गूंज सुनते ही ह्यूम तथा अन्य गोरे अफसर थर–थर कांपने लगे। तब ह्यूम ने साड़ी पहनी, फिर उस पर बुर्का ओढ़ा, महिला के वेश में वह जान बचाकर भागने में सफल हआ।

फिर से न झेलना पड़े, इसके लिए क्या उपाय किये जायें, यह चिन्ता उन्हें हमेशा सताती रही। संदर्भः (सन् 1857 का स्वतन्त्राता समर' से)

श्री सावरकर जी ने ह्यूम द्वारा आगे चलकर इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की पृष्ठभूमि को उजागर करते हुए लिखा वासुदेव बलवन्त को 1878–79 के सशस्त्र विद्रोह से भयाक्रांत हुए अंग्रेजी सत्ताधारियों तथा कूटनीतिज्ञों ने गहन विचार–विमर्श के दौरान एक संगठन बनाने का निर्णय लिया। भारतीयों की क्रांतिकारी प्रवृत्ति को कुंठित करने के उद्देश्य से आगे चलकर 1883 में सरकारी सेवा से मुक्त होते ही ए. ओ. ह्यूम ने इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना का ताना–बाना बुना। सन् 1885 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के बंबई (मुम्बई) में हुए पहले अधिवेशन में ह्यूम साहब ने बार–बार भारत साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया की जय–जयकार के नारे लगवाये। ह्यूम ने एक बार स्पष्ट कहा था कि ब्रिटिश सत्ता को हिन्दुस्तान में सुरक्षित रखने के लिए इंडियन नेशनल कांग्रेस की बड़ी आवश्यकता है।

कांग्रेस के तीसरे अधिवेशन में मद्रास के एक प्रतिनिधि ने उठकर शराब बंदी अधिनियम रद्द कर भारतीयों को भी शस्त्र रखने की अनुमति दिये जाने की मांग की तो ह्यूम बड़े रूखे स्वर में बोले, 'सन् 1857 के भीषण संकट के अनुभव को देखते हुए भारतीय लोगों को पुनः शस्त्र देने की छूट घातक होगी।' संदर्भः पांचजन्य, पृष्ठ 19, 7 मार्च 90

इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उनके उद्‌भट विद्वान, चिंतक तथा देशभक्तों ने वीर सावरकर की विचारधारा एवं दर्शन पर गहन विचार किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सन् 1935 के बाद हिन्दू कांग्रेस और मुस्लिम लीग ये दो राजनैतिक दल स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आये। मियां जिन्ना ने इस अवसर का खुला लाभ उठाकर मुस्लिम लीग के नाम पर पाकिस्तान की मांग करनी प्रारम्भ कर दी। **मियां जिन्ना यहां तक कहते सुने गये कि जब से इस देश में पहला मुसलमान आया, तभी से पाकिस्तान बनाने की घड़ी शुरू हो गई थी।** मि. जिन्ना जीवन भर महात्मा गांधी को कांग्रेस नहीं हिन्दू कांग्रेस का प्रतिनिधि/नेता ही मानते रहे। उल्लेखनीय यह है कि मि. जिन्ना न तो इस्लाम दर्शन को मानते थे और नहीं कभी नमाज पढ़ना पसंद करते थे। उनका इस्लाम से कोसों दूर का भी संबंध नहीं था। इससे प्रतीत होता है कि इस देश के हिन्दुओं ने प्रारम्भ से ही मित्र–शत्रु की दृष्टि नहीं रखी, बस यही सबसे बड़ी भूल हिन्दुओं ने की थी।

राजा–महाराजाओं के बड़े–बड़े कॉलेजों में पढ़ने वाले राजाओं, जागीरदारों, राज–दरबार के सरदारों के पुत्रों को पढ़ाने वाले प्रायः अंग्रेज शिक्षक/ प्राध्यापक थे। उन्होंने इन छात्रों को सावरकर को देशभक्त न मानके तथा काला पानी, सेल्यूलर जेल में समय काटने वाले देशभक्त को गलत ढंग से समझाने का कार्य प्रारम्भ किया। यही कारण है कि इन राजदरबार के दरबारियों के लड़कों ने सावरकर को 'क्षमा मांगकर जेल से छूटने वाले' कहना शुरू किया, जो कि यह बड़ा गलत और भ्रामक प्रचार मात्र था। जिन्होंने वीर सावरकर के जीवनचरित्र, उनकी देश सेवा, वीरता तथा साहस भरे कार्यों को समझा है, वे भलीभांति जानते हैं कि शेर चाहे भूखा मर जाये मांगकर घास नहीं खायेगा, ठीक इसी प्रकार सावरकर जी ने अनेकों कष्ट सहे, परन्तु अंग्रेजों से भी क्षमा कभी नहीं मांगी।

एक प्रश्न के उत्तर में स्वयं सावरकर जी ने कहा था, 'जेलों में पड़े रहने या सड़ने की अपेक्षा बाहर आकर संघर्ष करना अध्कि अच्छा होता है। संघर्ष से शत्रु राज्य की जड़ें हिलने लगती हैं। अतः क्षमा या प्रायश्चित कदापि उचित नहीं। **उन्होंने तो सेल्युलर जेल में रहकर कई मुस्लिम कैदियों को शुद्ध कर हिन्दु धर्म में प्रवेश दिलाया था।** वीर सावरकर केवल एक राजनैतिक नेता ही नहीं अपितु समाज सुधारक थे। अन्त्यजों का मंदिर में प्रवेश, बिना दहेज विवाह, अनमेल विवाह का विरोध तथा विधवाओं का पुनर्विवाह आदि सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते थे। वे हिन्दू महासभा के अध्यक्ष कहलाने की अपेक्षा कार्यकर्ता कहलाना अधिक पसंद करते थे।

अतः यह कहना अत्यधिक उपयुक्त होगा कि **सावरकर एक व्यक्ति नहीं, अपितु एक विचारधारा है जो इस स्वतन्त्र राष्ट्र के निवासियों को धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक चेतना प्रदान करती रहेगी।** उनके इस बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण वीर सावरकर सदैव प्रासंगिक और प्रेरणा श्रोत बने रहेंगे। इस महान नर केसरी को शत–शत प्रणाम। अखंड हो भारत माता।

'सुकिरण', अ/13, सुदामानगर, इन्दौर

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में

भव्य संगीत संध्या

रविवार, 15 अगस्त, 2010 सायं 5 से 8 बजे तक

स्थान : आर्य समाज, सूर्य निकेतन, विकास मार्ग, दिल्ली–92

गायक : नरेन्द्र आर्य 'सुमन' व साथी

आप सपरिवार सादर आमंत्रित है।

–: भवदीय :–

यशोवीर आर्य
प्रधान

डॉ. अनिल आर्य
संयोजक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) नई दिल्ली

राष्ट्रीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा का वार्षिक अधिवेशन

रविवार, 29 अगस्त, 2010
दोपहर 3 बजे

स्थान : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली–7

अध्यक्षता: डॉ. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
सभी सदस्य समय पर पहुंचें

–महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामन्त्री
फोन:011–22328595

आर्य समाज प्रशान्त विहार में वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज प्रशान्त विहार, दिल्ली–85, में वेद प्रचार सप्ताह 2 अगस्त से 8 अगस्त, 2010 **यज्ञः** प्रातः 7 से 9 बजे तक ब्रह्म स्वामी वेदानन्द जी, उपाचार्य आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी, **भजन/संगीत** : प्रतिदिन रात्री 7.30 से 8.30 बजे तक श्री जगत वर्मा जी द्वारा। **वेद उपदेश** : प्रतिदन रात्री 8.30 से 9.30 बजे तक वैदिक विद्वान स्वामी वेदानन्द जी, इस अवसर पर **आर्य महिला सम्मेलन** : 6 अगस्त दोपहर 2.30 बजे होगा। **पूर्णाहूति एवं समापन समारोह** : रविवार 8 अगस्त, 2010 को प्रातः 7 से 1 बजे तक होगा। सभी धर्म प्रेमी सादर आमंत्रित है। **–दुर्गा प्रसाद कालड़ा**–प्रधान, **ओम प्रकाश भावल**–मंत्री

चन्द्रशेखर आजाद

– सुभाष चन्द्र गुप्ता

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।।

अदालत में आजाद से पूछा गया–तुम्हारा क्या नाम है?
आजाद ने उत्तर दिया–**'आजाद'।**
मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा–'तुम्हारे पिता का क्या नाम है?
आजाद ने उत्तर दिया–**'स्वतन्त्रता'।**
मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा–'तुम्हारा निवास– स्थान कहाँ है?'
आजाद ने फिर उत्तर दिया–**'कारागार में'।**

मजिस्ट्रेट आजाद के उत्तरों से क्रुद्ध हो उठा। उसने आजाद को पन्द्रह बेतों की सजा दी। जेल में आजाद पर बेत पड़ने लगे। उन पर बेंत पड़ते जाते थे, और वे बेंत पड़ने के साथ ही 'वन्दे मातरम्' और महात्मा गाँधीजी की जय बोलते जाते थे। बेतों की मार से आजाद के शरीर की चमड़ी उधड़ गई, वे बेहोश होकर गिर पड़े। पर जब तक वे होश में रहे, बराबर वन्दे मातरम् और 'भारत माता की जय' के नारों से आकाश गुंजाते रहा।

इस घटना से सारी काशी में आजाद की यश–गाथा फैल गई। वे एक वीर बालक के रूप में माने जाने लगे।

1928 ई. में भारत में 'साइमन कमीशन' का आगमन हुआ। कांग्रेस के निश्चयानुसार सारे भारत में कमीशन का बहिष्कार किया जाने लगा। लाहौर में भी लाखों लोग लाला लाजपत राय के नेतृतव में साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए स्टेशन के अहाते में एकत्र हुए।

एकत्रित भीड़ पर डण्डे पड़ने लगे। हजारों लोग पुलिस के डण्डों से आहत हो गए। स्वयं लाला लाजपतराय जी की छाती में भी पुलिस के डण्डे से चोटें लगीं। उसी चोट से उनका प्राणान्त हो गया। सारे भारत में पुलिस के इस अत्याचार के प्रति विक्षोभ की लहर दौर पड़ी। भगतसिंह, राजगुरु और आजाद उत्तेजित हो उठे। उन्होंने लाला जी की मृत्यु का बदला लेने के लिए एक साहसिक योजना बनाई। परिणाम स्वरूप 1928 ई. की 17 दिसम्बर को, लाहौर के पुलिस सुपरिटेंडेंट सण्डर्स को गोली से उड़ा दिया गया। सण्डर्स की हत्या के बाद ही वायसराय की ट्रेन को तार के बम से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया। यद्यपि ट्रेन को उड़ाने में सफलता न मिली, पर सरकारी क्षेत्र में सनसनी फैल गई। इस साहसिक कार्य में भी आजाद का प्रमुख हाथ था।

1931 ई. की 23 फरवरी का दिन था। इलाहाबाद में साथी क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक होने वाली थी। आजाद कम्पनीबाग में एक वृक्ष के नीचे एक व्यक्ति की प्रतीक्षा करने लगे। कहा जाता है कि जिस व्यक्ति से उन्हें कई हजार रुपये लेने थे, उस व्यक्ति ने विश्वासघात किया। उसने पुलिस सुपरिटेंडेंट नाटबाबर को, आजाद की उपस्थिति की सूचना दे दी। नाटबाबर शीघ्र ही पुलिस–दल के साथ उस पेड़ के पास जा पहुंचा। उन्हें चारों ओर से घेर लिया गया। नाटबाबर जब आजाद को बन्दी बनाने के लिए उनकी ओर चला, तो आजाद ने उस पर गोली चला दी। गोली नाटबाबर के हाथ में लगी। उसके हाथ का रिवाल्वर छूटकर गिर पड़ा। वह एक पेड़ के ओट में छिप गया। आजाद उस पर दनादन गोलियां चलाने लगे। आजाद की गोलियां पेड़ में धंस जाती थी, नाटबाबर बच जाता था। इसी समय एक पुलिस इन्सपेक्टर बिशेश्वर सिंह ने आजाद पर गोली चलाई। आजाद गिर गये और अपनी ही गोली से जीवन लीला समाप्त कर अमर हो गये।

पं. अमर सिंह वाचस्पति के वेद प्रचार के कार्यक्रमों की धूम

आर्य समाज ब्यावर, राजस्थान के क्रांतिकारी और सैद्धान्तिक भजनोपदेशक पं. अमरसिंह वाचस्पति जी के दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, राजस्थान, नेपाल, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि प्रदेशों के कई नगरों एवं ग्रामों में संगीतमयी प्रभावी वेदप्रचार कार्यक्रम गत मासों में हुए और हो रहे हैं।

– आर्य समाज ब्यावर, राजस्थान, मो. 09829591986, 09352410836

योगेश्वर श्री कृष्ण

– सारस्वत माहन मनीषी

कृष्ण तो नाम है आकाश की ऊंचाई का
कृष्ण इक नाम है मुंह बोलती सच्चाई का।
कृष्ण को दुष्ट कहा करते जो खुद दुष्ट हैं वो।
कृष्ण को भ्रष्ट कहा करते जो खुद भ्रष्ट हैं वो।
सच तो ये है कि हिन्द देश की तकदीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
कौन कहता है भ्रष्ट रास रचाया करता?
कौन कहता है कि कपड़े वो उठाया करता?
कौन कहता है कि राधा को नचाया करता?
कौन कहता है कि माखन वो चुराया करता?
न्याय था नग्न हुआ उसके लिए चीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
सच कहो सत्य को आसन पे बिठाया किसने?
और अन्याय को मिट्टी में मिलाया किसने?
सच्चे हकदार को फिर हक था दिलाया किसने?
ज्ञान गीता का दुखी जग को सुनाया कितने?
सत्य कहते हैं सभी जीत की तदबीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।
कौन था कर्म का सिद्धान्त बताने वाला?
कौन था गर्व को झट धूल चटाने वाला?
कौन था कंस के आसन को हिलाने वाला?
कौन था मुर्दा पड़ा धर्म जिलाने वाला?
जिसका सानी न कहीं एक अजब वीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं न्याय की शमशीर था वो।
बांसुरी प्रेम की दुनिया को सुनाई किसने?
पाप के ढेर में थी आग लगाई किसने?
खण्डहर न्याय की फिर दुनिया बसाई किसने?
द्रौपदी लुटने लगी लाज बचाई किसने?
देवता योगी यती धर्म की तस्वीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं न्याय की शमशीर था वो।
कृष्ण का जन्म था जंजीर तोड़ने के लिए।
कृष्ण का कर्म था हृदयों को जोड़ने के लिए
कृष्ण के नीति नयन बन्द नहीं होते थे।
कृष्ण मानस में सदा पुण्य बीज बोते थे।
चल के खाली न गया ऐसा गजब तीर था वो।
कृष्ण कुछ और नहीं सत्य की शमशीर था वो।

ए–1/13–14, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली, मो. 9810835335

पलवल में युवा निर्माण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पलवल, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, आर्य नेता श्री लक्ष्मीचन्द आर्य व श्री के.एल. खुराना प्रधान आर्य प्रादेशिक उपप्रतिनिधि सभा हरियाणा के सान्निध्य में आर्य समाज जवाहर नगर, कैम्प पलवल में 13 जून 2010 रविवार से 20 जून 2010 रविवार तक युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

आयोजित युवक निर्माण शिविर का उद्घाटन श्री रघुवीर सिंह जी तेवतिया विधायक ने किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री के.एल. खुराना ने की। इस अवसर पर कंवर वीरेन्द्र सिंह पार्षद का आर्य युवक परिषद् की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की प्राचार्या अलका गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलित करके शिविर का शुभारम्भ किया। शिविर के अध्यक्ष डा. धर्मप्रकाश जी आर्य ने अतिथियों का स्वागत व श्री नारायण सिंह आर्य ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर प्रो. जयप्रकाश आर्य, श्री गिरिराज याज्ञिक, श्री चन्द्रपाल आर्य, श्री वी.के. आर्य, श्री चन्द्रशेखर मंगला, श्री सरदार सिंह कुण्डु, श्री वीरेन्द्र सिंह शास्त्री, राजपाल सिंह जी दहिया, पूर्ण सिंह जी राणा, मेघराज जी आर्य, श्री सतीश आर्य आदि आर्य नेता उपस्थित थे। युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर में युवाओं का मार्गदर्शन करने के लिए सर्व श्री स्वामी आर्यवेश जी संयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ब्र. दीक्षेन्द्र जी आर्य सचिव सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, डा. वृजेन्द्र जी आर्य, महाशय खेमसिंह जी आर्य, श्री रणजीत जी आर्य, प्रेमसिंह अम्बावता, श्री राजेन्द्र सिंह जी बीसला पूर्व विधायक, श्री प्रेम कुमार जी मित्तल एडवोकेट, श्री सत्यम शास्त्री, श्री मधुर प्रकाश आर्य आदि समय–समय पर आते रहे। युवा जनों को सहनसरपाल जी व्यायामाचार्य, श्री अंकित कुमार जी शास्त्री, श्री सुरेन्द्र कुमार चौहान, श्री विजय कुमार आर्य, श्री इन्द्रदेव जी मेधार्थी, श्री नरकेश शास्त्री, श्री गंगाशरण आर्य आदि ने योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे, लाठी–दण्ड, बैठक–मलखम्ब आदि का प्रशिक्षण दिया।

शिविर का दीक्षान्त समारोह 19 जून को सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल सभी युवाओं को यज्ञोपवीत दिये गए। इस अवसर पर युवाओं ने आजीवन शराब, मांसाहार, अण्डा, गुटका, धूम्रपान आदि से दूर रहने का संकल्प लिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शराब, दहेज, कन्या भ्रूण हत्या आदि के खिलाफ जन जागरण अभियान चलाने की युवाओं को प्रेरणा दी। सभी शिविरार्थियों ने इस अभियान में सहयोग करने का संकल्प लिया।

युवा निर्माण शिविर का समापन 20 जून को उत्साहजनक वातावरण में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता डा. धर्म प्रकाश जी आर्य ने की। श्री संजय फागना पार्षद मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर नगर परिषद् पलवल के अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह, कवर रमेश कुमार उपाध्यक्ष श्री मनोज बन्धु पार्षद, श्री केशव देव मुंजाल पूर्व चेयरमैन, श्री बलराम गुप्ता पूर्व पार्षद, श्री महेन्द्र भडाना पूर्व पार्षद, श्री जगन डागर पार्षद नगर निगम फरीदाबाद, भजन लाल आर्य सरपंच, नरसिंह जी आर्य सरपंच, माता भागवती आर्या, श्री गुरुदत्त गर्ग, श्री विजय सिंगला पत्रकार, श्री हाकिमराय आर्य आदि का स्वागत किया गया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा संचालित युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर स्व. लाल धनपत राय जी आर्य को सादर समर्पित किया गया। शिविर में 155 युवाओं ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की विचारधारा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन समारोह में पलवल जनपद की सभी आर्य समाजों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया व तन–मन–धन से सहयोग प्रदान किया। समारोह का संयोजन आर्य युवा नेता श्री विजेन्द्र सिंह जी आर्य ने किया। परिषद् के व्यायामाचार्य श्री सहनसरपाल जी आर्य ने ध्वज श्री जगन डागर पार्षद को सादर भेंट किया। जो वर्ष 2011 में गुरुकुल गदपुरी में फहराया।

–अत्तर सिंह स्नेही–संचालक

हिन्दुस्तानी नहीं लिखी

बुलन्दशहर 24 मई आज जनगणना का एक कर्मचारी मेरे घर आया और फार्म भरने लगा। मैंने कहा कि उनकी जाति हिन्दुस्तानी लिखी जाए क्योंकि बुद्धिजीवियों ने जनता से हिन्दुस्तानी लिखने की अपील कई अखबारों में छपवाई है।

कर्मचारी ने बताया कि हिन्दुस्तानी नहीं लिखी जा सकती है क्योंकि ऐसा प्रावधान ही नहीं है। प्रश्न है कि बुद्धिजीवियों ने फिर क्यों ऐसी अपील जारी की है जबकि उन्हें पहले फार्म अच्छी तरह से पढ़ लेना चाहिए था। फार्म में, कॉलम 15 में, अनुसूचित जाति को 1, अनुसूचित जनजाति को 2 तथा अन्य को 3 दर्शाया गया है अतः मेरे परिवार को अन्य नं. 3 में लिखा गया। बुद्धिजीवियों को सोच समझकर सही अपील जारी करनी चाहिए थी।

–**इन्द्रदेव गुलाटी,** संचालक वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनाालय, 18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर, उ.प्र.

झिटकरी, मेरठ में धर्म रक्षा सम्मेलन सम्पन्न

30 जून, 2010 को ग्राम झिटकरी, जिला मेरठ में क्षेत्रीय आर्य समिति तहसील सरधना, मेरठ के तत्वावधन में आयोजित धर्म रक्षा सम्मेलन के समापन समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने क्षेत्रीय जनता का आह्वान करते हुए कहा कि इस समय देश में इसाई मशीनरी सक्रिय हैं। भोली–भाली जनता को बहकाकर तथा प्रलोभन देकर उन्हें धर्म भ्रष्ट करने पर लगी है।

सरधना तथा मेरठ में बड़े चर्च हैं यहां से मिशनारियों को देहातों में भेजा जाता है। जनता को सावधान व सजग करते हुए उन्होंने कहा कि धर्मो रक्षति रक्षितः धर्म जिसकी रक्षा अपने करनी है। यह धर्म ही आपको बचा सकेगा। इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द, ठा. विक्रम सिंह, स्वामी यज्ञमुनि, यति नरसिंहानन्द, भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, जबर सिंह आदि के उपदेश हुए। क्षेत्रिय आर्य समिति के प्रधान श्री यशपाल सिंह–अच्छेपुर, मन्त्री श्री विजयपाल–सलावा, कोषाध्यक्ष श्री विद्यासागर त्यागी–सरधना तथा सर्वश्री मदनपाल आर्य, सेहंसर पाल, राजेन्द्र सिंह–झिटकरी ने व्यवस्था में विशेष योगदान किया। झिटकरी गांव वालों ने तथा निकटस्थ क्षेत्रवासियों ने हजारों की संख्या में बढ़–चढ़ कर इसमें भाग लिया।

बलरामपुर, लखनऊ में युवक चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधन में दिनांक 6 जून से 12 जून 2010 तक डी.ए.वी. इन्टर कॉलेज, बलरामपुर लखनऊ, उ.प्र. में युवक चरित्र निर्माण शिविर का भवय आयोजन जिला अध्यक्ष श्री अशोक तिवारी की अध्यक्षता में किया गया। शिविर में 150 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। आचार्य भानूप्रकाश शास्त्री, बरेली के भजन व पं. राजकिशोर शास्त्री व श्री सुरेश जोशी के प्रवचन हुए।

जम्मू में योग साधना शिविर सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधन में पटनीटाप, जम्मू–कश्मीर में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, रोजड. की अध्यक्षता में 24 जून से 27 जून 2010 तक शिविर लगाया गया। शिविर में 60 साधकों ने भाग लिया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री अरुण आर्य ने कुशलता पूर्वक संचालन किया।

श्री रामचन्द्र कपूर प्रधान निर्वाचित

दिनांक 11 जुलाई 2010, आर्य समाज कालका जी, नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव में श्री रामचन्द्र कपूर–**प्रधान,** श्री रमेश गाडी–**मंत्री,** व श्री सुधीर मदान–**कोषाध्यक्ष** चुने गये।

श्री राजेश मेहन्दीरत्ता प्रधान निर्वाचित

दिनांक 11 जुलाई 2010, आर्य समाज लाजपत नगर, नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव में श्री राजेश मेहन्दीरता–**प्रधान**, श्री सोमनाथ कपूर, **वरि. उपप्रधान,** श्री सुरेन्द्र शास्त्री–**मंत्री**, व श्री अनिल मिगलानी–कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज जनकपुरी, बी ब्लॉक का चुनाव सम्पन्न

27 जून 2010, आर्य समाज जनकपुरी, बी ब्लॉक, नई दिल्ली–58, के वार्षिक चुनाव में श्री वीरेन्द्र कुमार खट्टर–**प्रधान**, जगदीश चन्द्र गुलाटी–**मंत्री**, श्री यश पाल आर्य–**कोषाध्यक्ष** चुने गये।

आर्य समाज सैक्टर–७ रोहिणी का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर–7 रोहिणी, नई दिल्ली–85 के वार्षिक चुनाव में श्री अश्विनी आर्य–**प्रधान**, श्री ओमप्रकाश चुघ–**मंत्री**, श्री देवराज आर्य–**कोषाध्यक्ष** चुने गये।

श्री कृष्ण कुमार सिंगल प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, यमुना विहार, दिल्ली–53 के वार्षिक चुनाव में श्री कृष्ण कुमार सिंगल–**प्रधान,** श्री राम स्वरूप शास्त्री–**मंत्री** व श्री सत्यप्रकाश गोयल–**कोषाध्यक्ष** चुने गये। युवा उद्घोष की ओर से सभी नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई। –**सम्पादक**

पं. शोभाराम प्रेमी का अभिनन्दन समाोह

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. शोभाराम प्रेमी जी का अभिनन्दन 9 मई 2010 को मेरठ में बड़े धूमधम से किया गया। मनु संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित इस भव्य समारोह में उन्हें एक कार भेंट की गई एवं एक अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन किया गया।

–**धर्मवीर शास्त्री** संयोजक

श्रद्धांजलि

श्री बृजमोहन शर्मा का निधन

आर्य समाज सन्देश विहार, दिल्ली के पुस्तकालय अध्यक्ष श्री बृजमोहन शर्मा का गत् दिनों निधन हो गया। युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

श्री सूर्यदेव कोढ़ा का निधन

आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली के मंत्री श्री सूर्यदेव कोढ़ा का दिनांक 15 जुलाई 2010 को निधन हो गया। युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

श्री जे. सी गांधी को पत्नी शोक

आर्य समाज, अमर कालोनी, नई दिल्ली के कर्मठ सदस्य श्री जे.सी. गांधी, भ्राता श्री चन्द्रभान चौधरी, की धर्मपत्नी श्रीमती लीलावन्ती गांधी, आयु 70 वर्ष का 11 जुलाई 2010 निधन हो गया। युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

श्रीमती चित्रा शर्मा का निधन

आर्य समाज, दिलशाद गार्डन की पूर्व प्रधाना श्रीमती कृष्णा शर्मा की पुत्रवधू श्रीमती चित्रा शर्मा, धर्मपत्नी श्री गुरुदत्त शर्मा जो सिंगापुर में रह रहे थे, गत दिनों निधन हो गया। युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री को मातृ शोक

वैदिक विद्वान् आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली प्रदेश के महामंत्री व परिषद् के बौद्धिकाध्यक्ष आचार्य गवेन्द्र शास्त्री की पूज्या माता श्रीमती लोंगश्री देवी, आयु 55 वर्ष (धर्मपत्नी श्री किशोरीलाल नगला एहराना, एटा ;उ.प्र.) का 6 जुलाई को 2010 को दोपहर दो बजे निधन हो गया।

श्रद्धांजलि सभा रविवार, 11 जुलाई 2010 को आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60 में सम्पन्न हुई। जिसमें सैकड़ो आर्य बन्धुओं ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किये। प्रमुख वक्ताओं में पं. मेघश्याम वेदालंकार, प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, आचार्य अमर देव शास्त्री, डॉ. भारद्वाज पाण्डेय, श्री सुरेश शास्त्री, पं. सतीश सत्यम्, श्री मूलचंद चावला पार्षद, श्री जगदीश आर्य, श्री अनिल शास्त्री, श्री रमेश बग्गा, श्री नरेन्द्र वलेचा, श्रीमती शशिप्रभा आर्या, श्रीमती अमृता आर्या, श्रीमती आदर्श सहगल, श्री महेन्द्र भाई, श्री सतीश शास्त्री, आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा का संचालन परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने किया।

ई-न्यूज रूपान्तरण - देवेन्द्र भगत